डॉ. अभिनव दिव्यान्शु

'हनुमान बुद्ध-राज कुमार सिद्धार्थ की पुजा करते है, यह मुलाकात बोधगया में हई'

प्रस्तावना-

भारत में हनुमान नामक एक वानर की पूजा की जाती है। रामायण के अनुसार हनुमार एक वानर है जो राम की पूजा करतें हुए दिखाई देता है। परन्तु रामायण की रचना 1193 ए.डी. के बाद भक्तिकाल की रचना है। यानी रामायण की रचना एक तरह से मध्यकालीन रचना है। तो प्रश्न यह है कि वो राजा या राजकुमार कौन है जो जंगल में आया और हनुमान या वानर से मिला। क्या वो राजा बुद्ध थें? इसके लिए प्राचीन बौद्ध मूर्तिकला का अध्ययन जरूरी है।
पहचानो कौन?
कौन किसकी नकल है?
कौन क्या कर रहा है?
दोस्तो इतिहास के संदर्भ मे मेरी खोज मुझे बुद्ध तक ले गई।

हनुमान व राजकुमार राम भ्राता प्रेम प्रंसग रामायण का, बुद्ध कपि प्रेम पंसग से प्रेरित होकर ही लिखा गया है। चुकि बुद्ध ने पशुबलि का विरोध किया था इसलिए जंगल के प्राणियों की रक्षा हो सकी। यही कारण है कि भारतीय भाषा शब्दकोशों में ये जितने भी जंगल के प्राणीयों के नामों में आगे पीछे राज या राज कुमार शब्द जुड़ा हुआ मिलता है जैसे -प्राणराज, नागराज, वानरराज, कपिराज, पक्षिराज इन शब्दों में राज या राजकुमार और कोई नही बुद्ध या यु कहे राजकुमार सुकिती सिद्धार्थ ही है।

हिन्दु धर्म की पौराणि राम हनुमान जंगल भ्राता प्रेम प्रसंग असलियत में बुद्ध के जीवन में घटी घटना पर आधारित है। वनराज और कोई नही बुद्ध ही है उनका ही उपनाम है। कौन राजकुमार या राज वन में आया? राजकुमार सिद्धार्थ आए।

ये बताओं कौन जंगल में आया ?कौन राज कुमार ने घर छोड़ा?पशुबलि कि निन्दा किसने की? जंगल के प्राणियों की रक्षा कौन कर रहा है? बोधगया विश्व में किसलिए प्रसिद्ध है? वो राजा कौन है? क्या पूरे विश्व इतिहास में भारत के बाहर ऐसा कोई राजा है जो जनकल्याण व धम्म कल्याण के लिए राजा से भिक्खु बन गया हो? या जिसने राजपाठ त्याग

दिया हो? जंगल में वनवास किसने काटा? तपस्या किसने की? अखण्ड समाधि किसने लगाई? कौन घूम रहा है? सिद्धि किसने की? सिद्धि शब्द सिद्धार्थ से ही निकला है। सारे सवालो के जवाब का एक नाम–बुद्ध।

अब इस मूर्ति को देखे बताऐ इसमें वो वानर, वो कपि या वो बन्दर या वो हनुमान या वो वानर सेना, किसके पास बैठी है? बुद्ध के कहने पर लोगो ने जंगल के प्राणियों का शिकार करने से अपने आप को रोक लिया जिससे प्राणियों की रक्षा हो सकी। बुद्ध द्वारा प्राणियों की रक्षा वास्तव में एक प्राणी द्वारा दूसरे प्राणी की रक्षा करने का वचन था। जो आगे चल कर हिन्दु धर्म ग्रन्थों के पौराणिक दन्त कथाओं का भक्तिकाल 1350 ईसवी से 1650 ईसवी में आधार बना। अर्थात दिल्ली सलतनत या मुगल काल के दौरान। परन्तु लोग ये नही जानते कि ये रजकुमार और कोई नही बुद्ध ही है।

हनुमान के हाथ में पहाड़ नही बल्कि शहद का प्याला या छत्ता है जो बुद्ध को समर्पित है। जो आगे भ्रम वश उसे हिन्दु आर्ट में पहाड़ दिखाया गया है। संजीवनी बूटी और कुछ नही बल्कि शहद ही है जो मधुमख्यिॉ बनाती है। इसी दिन को मधुपूर्णिमा का त्यौहार चकमा,बरूआ जाति के लोग बंगलादेश में मनातें है व थाईलेन्ड देश के मून लोग भी इसी दिन को त्यौहार के तौर पर मनातें है। दरसल ये लोग शाक्य वंशावली से या उसके आस पास की प्राचीन जनजातियों के वर्तमान में वंशज है जिससे बुद्ध आते है।

बुद्ध ही वानरराज है। वही राजकुमार। वानरों की पशुबिलि से रक्षा करने वाला। बुद्ध ने समाधि लगाई और एक वानर ने शहद बुद्ध को भेट किया।

लोग, सभ्यता, संस्कृति, भाषा, किताबें सब बदलती है परन्तु पत्थर नहीं बदलता। पहचानों कौन? क्या हो राह है?ये वो ही वानर है, वही हनुमान है, वही कपि है और वही वानरराज सिद्धार्थ है। ये बात सबने देखी, बाद में मूर्तियॉ भी बनी। महाकपिजातक में सबसे पहले इसका उल्लेख आया और बाद में रामायण में, फिर लोग सिद्धार्थ को भूल गये और गढ़बड़ हुई साहित्य में, क्यों कि भाषा साहित्य ही बदल गया। आप हनुमान जी की पूजा कर रहें है और हनुमान जी बुद्ध की ही पूजा कर रहे है, उन्ही को भेंट दे रहे है। आप स्वयं ही देख ले।

यही कारण है कि साहित्य के क्षेत्र में जितनी भी हिन्दु धर्म ग्रन्थों पर शोध या रिसर्च हुई है उन सबको फेल करार दे दिया गया। उनमें प्रमाण नही थें। प्रमाणों के नाम पर बस भक्तिकाल की कविताएं थी। और लोग पागल हो कर वाह वाह बोल रहें है। पुरातात्विक स्तो

में सारे सब्त बुद्ध के ही है। बुद्ध की ही विरासतों पर हिन्दु धर्म खड़ा हुआ है और जहॉ भी बुद्ध को नकारा वहॉ हिन्दु धर्म ही नष्ट हो गया और तो और हिंसा ही फैली है–ये अफगानिस्तान में क्या हो रहा है सदियों से? हिन्दु या सनातन शब्द बुद्ध से सम्बन्धित है या उन्हीं के वचन है। रूमिमनदेईअभिलेख को देख ले।

संस्कृत साहित्य भाषा से प्राचीन पालि साहित्य है,बुद्ध साहित्य है। संस्कृत 800 ईसवी के बाद की भाषा है। देवनागरी का विकास ही 8 वी सदी के बाद ही होता है। ब्रिटिश लोगों ने सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अनुवाद कर दिया है और अब कुछ बचा नही है परन्तु बौद्ध साहित्य की किताबों का अभी तक सही अनुवाद हिन्दी में तो छोड़े अंग्रेजी में भी नही हो पाया है। हिन्दु पेन्टिंगस या आर्ट बौद्ध कला की विरासतों पर खड़ी हुई है जो बुद्ध से निकलती है। चीन, जापान, कोरिया, इडोनेशिया, श्रीलंका, मथुरा, गान्धार सभो बुद्ध को ही जानते है और किसी का नाम सामने नही मिलता है।

काल्पनिक राम की कथा बुद्ध से ही प्रेरित है। बुद्ध ही वही राजकुमार है। प्रमाण आपके सामने है। हालाकि हनुमान की असली कथा कुछ और ही है परन्तु उसकी बात फिर कभी। बाकी भारतीय विरासत आपके हवाले।

क्या आपने ये मूर्ति किसी हिन्दी साहित्य की किताब में देखी है? पंजाबी साहित्य मे? मराठी मे? भोजपुरी में? अवधी में? बंगाली में ?गुजराती में, मराठी में, कन्नड़, तमिल, तेलगू में कही ये मूर्ति कही छपी है? अब ये बताओ क्या गढ़बड़ हो रही है। यही कारण है कि अग्रेज बोलतें थे कि अगर हिन्दु धर्म अपनी पुरानी विरासतों को जनता के सामने नही रखा तो वो नष्ट हो जाऐगा।

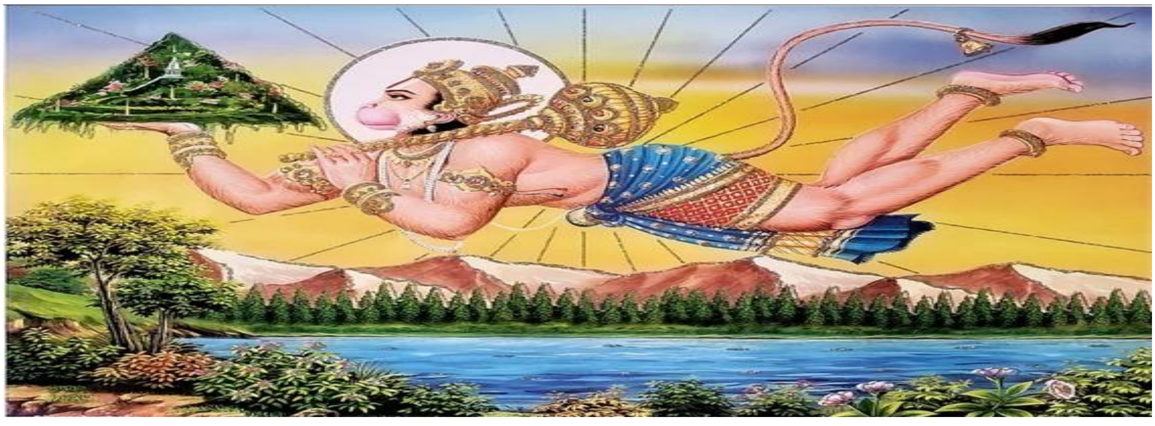

बुद्ध बोध गया में तपस्या में थे और पशु बलि का विरोध किया बौध मूर्ति में उस हनुमान या वानर ने अपनी प्राणों की रक्षा के बदले शहद के छत्ते को बुद्ध को भेंट किया

3

जिसको 15 वी सदी के हिन्दु कला में व बाद में ब्रिटिश काल के दौरान गलती से पहाड़ दिखाया गया है। संजीवनी बूटी और कुछ नही शहद ही है।

दोस्तों, भारतीय इतिहास व साहित्य पर दृष्टि डालें तो पौराणिक कथाओं का एक नायक उभर कर सामने आता है जिसे वानर, कपि या साधारण भाषा में हनुमान के नाम से जाना जाता है। परन्तु ये किरदार विकसित कहाँ से हुआ? इसकी ऐतिहासिक पहचान क्या है? इसका महात्मा बुद्ध से क्या लेना देना है?

पहचानो कौन? कौन असली, कौन नकली? कौन किसकी नकल है? पहले क्या था बाद में क्या हुआ ? रामायण या रामचरितमानस के अनुसार हनुमान तो राम की पूजा करतें हैं, तो इनका सम्बन्ध बुद्ध से कैसे है? जंगल में मुलाकात वानर की किससे हुई? कौन वन में आया? कौन है वो, कहा से वो आया?

क्या कोई ऐसा भारतीय इतिहास में सबूत या प्रमाण है जिससे ये साबित हो सके कि हनुमान का पौराण्कि किरदार किस राजकुमार की पूजा कर रहा है? राम का किरदार ऐतिहासिक नही है वो पौराण्कि है तो ये कौन राजकुमार है? इन सभी का नालन्दा विश्वविद्यालय से, पालि साहित्य से, साँची स्तूप से व बौधगया से क्या सम्बन्ध है? आदि ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तरो को जानने का प्रयास किया गया है।

मुख्य विषय-

इतिहास पर नज़र डाले तो इन सब की शुरूआत मोटे तौर पर भक्ति काल से मानी जाती है। जिसका समय 1350 ईसवी से 1650 ईसवी का माना जाता है। भक्ति आन्दोलन को मोटे तौर पर सगुण व निर्गुण धारा में विभाजित किया जाता है। सगुण धारा में राम व कृष्ण भक्ति काव्य आता है तथा निर्गुण में ज्ञान मार्गी व प्रेम मार्गी काव्य साहित्य आता है। ध्यान दे ये काव्य साहित्य है परन्तु इतिहास साहित्य नही है। दोनो बातों में अन्तर है।

काव्य, कविता, साहित्य का कोई नियम नही होता बल्कि इतिहास के बहुत से नियम होतें है। इतिहास-ऐसा ही हुआ था। अर्थात इतिहास जगत में साहित्य के बहुत से पौराणिक किरदारों को मान्यता नही दी जाती है।

दोस्तों इतिहास में मेंरी खाज मुझे एक बार फिर बुद्ध तक ले गई। हनुमान व राम की कथा आपने काफी सुनी होगी। परन्तु क्या अपको पता है कि कहाॅ से इसकी शुरूआत हुई?

चित्र–1– वानर द्वारा बुद्ध को, शहद के प्याले को दक्षिणा या भेंट करते हुए व वंदना करते हुए।[1] साबित है कि रामायण 1200 ईसवी के बाद मध्यकालीन रचना है।

प्रथम चित्र बुद्ध मूर्ति का प्रस्तुत है, जो 10 वी सदी की है। प्रस्तुत मूर्ति में हनुमान या कपि को बुद्ध वन्दना करतें हुए दिखया गया है। अब ये बात साबित होती है कि ब्रिटिश काल में यानी 18 वी और 19 वी सदी में जो हनुमान व राम की चित्रकारी व तस्वीरे बनायी गई है वे बुद्ध की मूर्तियों से ही परित है। अंग्रेजी हुकूमत से आजादी चाहिए थी और इसके लिए धर्म एक मजबूत आधार था। इसके लिए साम, दाम, दण्ड या भेद कुछ भी करना पड़े वो किया गया। चूकि प्राचीनता बुद्ध मूर्तियों की थी जिसको अग्रेज खोज चुके थे इसलिए हिन्दु धर्म के लोगों ने उसी को आधार मानकर पौराण्कि चित्र 18 वी व 20 वी सदी में बनाए। लोगो को लगा कि एसा ही हुआ होगा, दोनो में समानताए भी थी जैसे राजकुमार का वनवास आदि। परान्तु बुद्ध का नाम ना लेकर उसकी जगह कोई काल्पनिक चरित्र आ गया और यही गड़बढ़ हुई। राजकुमार सिद्धार्थ को आधार मानकर ही राम भक्ति धारा का विकास हुआ है। यही वो राजकुमार सिद्धार्थ है। शाक्य गण के प्रधान या राजा। आप हनुमान की पूजा करते है और हनुमान जी बुद्ध राजकुमार की पूजा कर रहें है। राम प्रमाणिक शब्द नही है। प्रमाणिक शब्द

[1] Monkey gives honey to Buddha Shakyamuni, India, Bihar, probably Kurkihar, Pala dynasty, c. 1000 AD, black stone - Östasiatiska museet, Stockholm - DSC09270.JPG

सुकिति बुद्ध है। हॉ ये और बात है राम का किरदार पुश्यमित्र शुंग (184 ईसा पूर्व) व उसके पुत्र अग्निमित्र से ज्यादा प्रेरित होकर ही वाल्मीकि ने रामायण की रचना की है। ऐसा राहुलसांकृत्यायन का मत है।[2]

अर्थात 10 वी सदी तक हनुमान, वनर, कपि-बुद्ध वंदना प्रसंग के नाम से जाना जाता था। 1350 के बाद अर्थात सलतनत काल के मुस्लिम दौर में बुद्ध को आधार मानकर जब राम भक्ति साहित्य का उदभव होने लगा तो ये प्रसंग रामायण का और बाद में रामचरित मानस का आधार बना।

बखतियार खिलजी ने 1193 में नालन्दा विश्वविद्यालय को जला दिया, इससे समाज में गिरावट आ गई और लोग बुद्ध को भूल गए। पालि साहित्य जल गया परन्तु मूर्तिया शेष रह गई। यह मूर्ति भक्ति काल के राम भक्ति काव्य की सच्चाई प्रस्तुत कर रही है। जिसमें हनुमान बुद्ध को भेंट प्रदान कर रहे है और वन्दना कर रहें है। ये ही वे राजकुमार है, सिद्धार्थ है, शक्य गण के राजा है।

इतिहास में देशी स्त्रोतों के साथ विदेशी स्त्रोतो का अध्ययन काफी मायने रखता है। एक अन्य मूर्ति को देखे उसमें भी कोई वानर राजकुमार सिद्धार्थ की पूजा करतें हुए दिखाया गया है। बुद्ध तपस्या कर रहे है, दो शेर है और मध्य में ये वही हनुमान वानर या कपि है। कपि द्वारा बुद्ध बंदना ही आगे चलकर रामायण या 15 वी सदी के रामचरितमानस का आधार बनी।

परन्तु ईसवी सदी के आस पास ही यह परिदृष्य पूरे ऐशिया में फैल चुका था। मंकि किंग की जो धारणा दक्षिण पूर्व ऐशिया, चीन, जापान या कोरिया आदि देशों में फैलो है और जो साहित्य रचा गया है उसका आधार बुद्ध ही है। क्योंकि बुद्ध ने पशुबलि का विराध किया था इसलिए वन के सारे प्राणि बुध की पूजा करतें है और उनकी वन्दना करतें है। एक अन्य

[2] वोल्गा से गंगा,राहुलसांकृत्यायन, पेज-16

मूर्ति को भी देखे।

चित्र–2– हनुमान या वानर द्वारा बुद्ध की वन्दना व मधु की दक्षिणा प्रदान करते हुए।[3]

चित्र–3–10 वी सदी की मूर्ति, पाल साम्राज्य, बिहार,भारत। नालन्दा विश्वविद्यालय 1193 ईसवी में जला। इससे यह बात साबित होती है कि रामायण 12 सदी के बाद की रचना है।

[3] BROWN, ROBERT L. "Telling the Story in Art of the Monkey's Gift of Honey to the Buddha." Bulletin of the Asia Institute 23 (2009): 43–52.(Monkey's Offering of Honey at Pārileyyaka)

चित्र-4, 5-हनुमान व राम के चित्र जो ब्रिटिश काल में बनाए गऐ।

चित्र-6-यही वानरो द्वारा बौधी वृक्ष के फलो को खाने की घटना से ही पौराणिक हनुमान द्वारा सूर्य को फल समझकर खाने की दन्त कथा विकसित हुई। लोगों व सैनिको द्वरा वृक्ष की रक्षा करते हुए। सॉची स्तूप।

हनुमान द्वारा सूर्य को फल खाने की दन्त कथा वास्तव में बोधगया के बोधी वृक्ष के फलों के खाने से निकली है। सॉची स्तूप के तोरण द्वार पर इस दृष्य को अकिंत किया गया है। आप स्वयं देख सकतें है। घटना बौध धर्म में 600 ईसा पूर्व में घटी है। और समस्या ये है कि इसका पौराणिक करण करके हिन्दु धर्म 1350 ईसवो के बाद भक्तिकाल के साहित्य से इसकी भूली बिसरी यादे ताजा कर रहा है। जबकि 14 वी सदी के साहित्य से 600 ईसा पूर्व की घटनाओं की व्याख्या नही की जा सकती है। उसके लिए हमें पालि साहित्य की तरफ जाना होगा अर्थात महाकपिजातक पाण्डुलिपि की ओर।

चित्र–7–सॉची स्तूप।

चित्र–8–वानरो द्वारा बोधगया के बौधी वृक्ष की पूजा करते हुए, सॉची स्तूप।[4]

सच्चाई तो ये है कि हिन्दु धर्म की पौराणिक कथाएँ जातक कथाओ से प्रेरित है। हनुमान कथा, महाकपिजातक से ली गई है। जातक कथाएँ भारत की सर्वप्राचीन या सर्वप्रथम रचनाएँ है और वर्तमान का जाटव समाज ही इस जातक साहित्य के रचनाकारों के वंशज है। जाटव शब्द पालि साहित्य का जातक शब्द का अप्रभ्रंश रूप है। अर्थात जाटव समाज ही प्राचीन भारतीय समाज के मूल निवासियों का वर्तमान वशंज है। ये अल्पसंख्यक समुदाय है और हिन्दु धर्म का नही बल्कि बौध धर्मी समुदाय है। ये शिल्पकार समुदाय है और सिन्धुघाटी सभ्यता की

[4]https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Offering_of_a_bowl_of_honey_to_the_Blessed_One_by_a_monkey_Sanchi_Stupa_1_Northern_Gateway.jpg

खुदाई में कुछ कलाकृतियों पर जातक कथाओं का प्रभाव मिलता है। अगर ये सच है तो मानना पड़ेगा कि जाटव समुदाय सिन्धुसभ्यता के निवासियों का वशंज है और प्राचीन भारतीय मूल निवासीयों के समुदायों में से एक समुदाय है। और इन्होंनें ही भारतीय सभ्यता की आधारशिला रखी है। हिन्दु धर्म जो पौराणिक बातें बताता है वो वास्तव में इन्हीं मूल निवासियों के समुदायों में घटी घटनाओं पर आधारित है।

बौध धर्म में 28 बुद्ध हुए है।[5] 28 वें बुद्ध-राजकुमार सिद्धार्थ की मृत्यु के बाद जो बौध धर्म में प्रथम संगति हुई थी, अजातशत्रु के समय में जिसमें त्रिपिटकों की रचना हुई। और झगड़ा भी हुआ। राजकुमार सिद्धार्थ के साथ साथ सभी 28 बुद्धों के उपदेशों का सार लिखने पर सहमति बनी।

ये काम वो ही जाति या समुदाय कर सकती थी जिसने 28 बुद्धों को अपने ऑखों से देखा हो और उनसे शिक्षा, दिक्षा और भिक्क्षा सीधे उन्ही बुद्धों से प्राप्त की हो या दी हो। यानी सीधा सम्बन्ध। तब कुछ लोगों ने कथाओं का संकलन किया और जातकों का लेखन कार्य किया जो आगे चलकर जातक कथाओं के नाम से प्रासिद्ध हुए और ये ही वर्तमान के जाटव समुदाय है। मथुरा संग्रहालय की बुद्ध मूर्तियों के जन्मदाता है। बौध धर्म को विश्व धर्म बनाने का श्रेय इन्ही को जाता है।

चूकि ये शिल्पकार आर्किटेक्ट व पत्थर तराशने में माहिर थे इसलिए इस्लाम के आगमन पर मथुरा को सिकन्दर लोदी 1504 ईसवी में तोड़ा और आगरे की स्थापना की और जाटव समुदाय ने 80% इस्लाम कबूला, इसलामिक इमारते खड़ी की ताजमहल या लालकिला आदि और इससे यह समुदाय अल्पसंख्यक हो गया। बाद में ब्रिटिश लोगों ने इसे हिन्दु धर्म में पंजीकृत किया और अल्पसंख्यक जाति का दर्जा दिया। जैन धर्म के बहुत से समुदायों के साभ भी ऐसा ही हुआ। यही भारतीय सभ्यता का पतन है। और हिन्दु धर्म की भूली बिसरी यादें है। या पौराणि कथाऐं है। पंचतन्त्र या तोता मैना की कहानि, दादा दादी की कहानियों का आधार जातक कथाएॅ ही है।

[5] Khoye Hue Budhha Ki Khoj : Dr. Rajendra Prasad Singh

चित्र–9– हनुमान ही नही विभिन्न वानर सेना बुद्ध को ही दान दक्षिणा दे रही है। क्योंकि बुद्ध द्वारा पशुलि के विरोध से उनके प्राणों की रक्षा हुई। सॉची स्तूप।[6]

चित्र–10– परिलेयाकावन में दक्षिणा–थाईलैण्ड परंम्पराओं के हिसाब से।[7]

जब मैने यह मूर्ति देखी तो मुझे विश्वास नही हुआ फिर मैने इस मूर्ति की और इसके इतिहास की जॉच पड़ताल की। तब मुझे असली इतिहास के बारे में पता चला। कुछ बिन्दु निम्न है–

[6] Monkey’s Gift of Honey. Northern gateway, West pillar Stupa I, Sanchi. 25 B.C.E.—25 C.E. Photo: John C. Huntington, Courtesy of the Huntington Photographic Archives at The Ohio State University

[7] https://www.bulletinasiainstitute.org/abst/vol23/Brown.html

हनुमान का चरित्र जातक कथाओं की एक पाडुलिपि महाकपिजातक से ली गई है। बुद्ध ने पशु बलि का विरोध किया था यही कारण है कि भारतीय मूर्तिकला में हमें बुद्ध के साथ विभिन्न पशु उनसे प्रेम करते हुए दिखाई देतें है। राम हनुमान का भ्राता प्रेम प्रंसग भी बुद्ध वानर प्रम से प्ररित होकर ही भक्ति काल में यानी 1350 से1650 ईसवी के बीच में लिखा गया है। ये वानर या वानरराज या हनुमान किस राजकुमार की पूजा कर रहें है? वही राजकुमार सिद्धार्थ। वो राजा कौन था जो वन में तपस्या करने आया? कौन घर छोड़ कर आया? वन में किस की मुलाकात किससे हुई? महाभिषनिष्क्रमण साहित्य में किसका हुआ है? पूरे भारत के सारे साहित्य के इन सारे सवालो के जवाबो का एक नाम-बुद्ध। राजकुमार सिद्धार्थ गौतम बुद्ध।

यह मूर्ति 10 वी सदी की बताई जा रही है। इसको बहुत मुशकिलो से खोजा गया है। इसमें एक छोटा वानर शहद के प्याले को बुद्ध को भट कर रहा है जब वो बोधगया में तपस्या कर रहे थे। बंगलादेश के चटगॉव के चकमा व बरूआ लोगों के द्वारा इस दिन को मधुपूर्णिमा या शहद पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। कहनियॉ काफी है परन्तु एक बात स्पष्ट है कि बुद्ध ने पशु बलि का विरोध किया ताकि प्राणियों की रक्षा हो सकें।

कपिराज, वानरराज, नागराज, वनराज, पक्षिराज, प्राणराज, प्रजापति आदि भारत की विभिन्न भाषाओं के भाषाकोशों में ये जितने भी नाम है ना वो वास्तव में बुद्ध के ही नाम या उनकी उपाधियॉ है। ये सारे नाम बुद्ध के ही है। कौन राजकुमार वन में आया और घूम रहा है बताओं? किस राजा ने अपनी पत्नि को छोड़ा? किसके साथ क्या हुआ? बुद्ध बुद्ध बुद्ध।

इसका मतलब ये हुआ कि 13 वी सदी के बाद ही भक्तिकाल की राम भक्ति धारा का विकास हुआ है। उससे पहले ये बौद्ध धर्म में बुद्ध भक्ति धारा मानी जाती थी। ये गढ़बढ़ इसलिए हुई कि जब बख्तियार खिलजी ने नालन्दा विश्वविद्यालय को 1193 इसवी में जला दिया तब समाज में गिरावट आ गई। ना शिक्षक रहे ना छात्र। यह बात साबित होती है कि रामायण भी 1200 ईसवी के बाद की व मध्यकालीन रचना है, क्योंकि 10 वी सदी की बुद्ध-हनुमान मूर्ति सुरक्षित है।

राम भक्ति काव्य के कवियों में रामानन्द, अग्रदास, तुलसीदास, नाभादास, केशवदास आदि आतें है। इन सभी कावियों का समय लगभग 1200 ईसा के बाद का ही है। अर्थात नालन्दा विश्वविद्यालय के जलाये जाने के बाद का। इसको समझिये।

1350 से 1650 इसवी के भक्ति काल को साहित्य में स्वर्ण काल की संज्ञा दी जाति है परन्तु उसके पास इतिहास के प्रमाण नहीं है। बस यही समस्या खड़ी हो जाती है। घटना 600

ईसा पूर्व की है और उसके जो प्रमाण दिए जाते है, वे प्रमाण है ही नही और तो और वे दिल्ली सल्तनत काल के बाद यानी 1200 ईसवी के है। यही समस्या है। अर्थात 1350 ईसवी के साहित्य से 600 ईसापूर्व के साहित्य की व्याख्या नही हो पा रही है। उसकी जानकारी कही और है।

इससे लोकल कथाऐं प्रचलित होने का सिलसिला चालू हुआ जिससे भक्ति काल के साहित्य का विकास हुआ। परन्तु ये बात असली ना थी बल्कि काल्पनिक और मिलावटी थी। यही कारण है कि भक्ति काल के साहित्य राम भक्ति काव्यधारा के पास इतिहास के प्रमाणो का आभाव सा है।

मतलब राम भक्ति धारा का विकास दिल्ली सलतनत काल के मघ्य या अन्तिम अवस्था में चालू हुआ। इससे लोकल स्थनीय भाषा व उसकी लिपि का भी विकास हुआ। वालमीकी रामायण का राम हनुमान प्रम असल में 12 वी सदी से पहले बुद्ध कपि या वनर प्रम प्रंसग के रूप में जाना जाता था। जिसका प्रमाण यह बुद्ध मूर्ति है। 12 वी सदी के बाद का भक्ति साहित्य कुछ और है और 12 वी सदी से पहले का साहित्य कुछ और बोल रहा है। इसको समझिये।

बुद्ध कपि प्रसंग ही रामायण का आधार बना। बाद में यही 16 वी सदी के तुलसीदास के रामचरितमानस का आधार बना। लोग अपनी मूल भाषा पालि साहित्य को भूल चुके थे। इसलिए वे स्थानीय लोकल साहित्य की तरफ आकर्षित हुए। जबकि यह लोकल साहित्य अपने से पूर्व के साहित्य की विरासतो पर खड़ा हुआ है। अगर आप पालि साहित्य को नही जानते तो आप अपने पूर्वजो के इतिहास को नही जानतें।

जहॉ भक्ति है, वहॉ तर्क विज्ञान नही और जहॉ प्रमाण है, विज्ञान है वहॉ उसका कोई समर्थन नही करता है। सारे साहित्य की यही समस्या है। अब अप खुद इस मूर्ति को देखे और बताए कि हनुमान या वानर किसकी पूजा कर रहें है? वही बुद्ध। कण-कण में बुद्ध है इस कहावत का क्या मतलब है? आप कितना भी गूढ़ अघ्धयन कर ले आप की खोज बुद्ध पर ही खत्म होगी। डी. एन. ए. वही मिलेगा।

ध्यान दे कि वानर का अर्थ है वन में रहने वाला नर या आदमी। वनरराज का अर्थ है वन में रहने वाले लोगों का राजा। बुद्ध ने वन में ही तपस्या की थी इसलिए सभी वन के लोग बुद्ध की ही पूजा अर्चना कर रहे है। यही भारतीय मूर्ति कला में एक जगह नही बार बार भारत

व विश्व में दिखाया गया है। गॉधी जी के तीन बन्दर बुरा मत बोलो, सुनो, कहा, सोचो आदि बौध धर्म के अष्टागिक मार्ग की ही देन है। इसको समझिए।

घटना 600 ईसा पूर्व में घटी और भक्ति काल का साहित्य दिल्ली सलतनत काल में लिखा गया। यानी 1350 से 1650 ईसवी के बीच में। मतलब दोनो के बीच 1800 सालो का फासला है। यही दिक्कत है कि भक्ति काल के साहित्य से ईसा पूर्व की घटनाओं की प्रमाणिक व्याख्या नही हो पा रही है। प्रमाण तो कुछ और ही बोल रहे है। लोग बस अपनी बात थोप रहे है। इसलिए इतिहास चुप है। साहित्य को इतिहास समझकर झूठ का डंका बज रहा है।

उपसंहार-

भारत बुद्ध की भूमि है। बुद्ध के नाम पर ही भारत की पहचान है। बौध धर्म की वज्रयान शाखा ही आगे चलकर हिन्दु धर्म बनी। जिसमें तंत्रयान शाखा से देवी देवता उधार लिए गए है। यही हिन्दु धर्म की उत्पत्ति का इतिहास है।

हनुमान द्वारा सूर्य को फल समझकर खाने की दन्तकथा बोधी वृक्ष के फलो के खाने से निकली है जिसको साचीस्तूप कला पर दर्शाया गया है। लोग बोधी वृक्ष को वानरो से बचा रहे है।

मंगोलिया, चीनी, भूटान, इन्डोनेशिया तिब्बत, हिमाल्य, जापान, कोरिया, दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में जो मंकि किगं की दन्तकथाऐ फैली है, उनके साहित्य में वो बुद्ध साहित्य की ही विरासतो पर खड़ी हुई है। जातक कथाऐं ही भारत की पहली पाडुलिपियॉ है। अब ये बताओ कि भारत या भरत कौन है? बुद्ध का ही नाम है। तिब्बती स्त्रोत व पाण्डुलिपि मन्जुश्रीमूलकल्प के अनुसार।[8]

सॉची या भरहुत कला को देख ले वहॉ भी बानर सेना उसी बोधी वृक्ष की पूजा कर रही है और दान दक्षिना दे रही है। बुद्ध से ही प्रम व उनकी पूजा कर रही है। हनुमान, वनवासी या वानरराज सभी बौद्ध धर्मी ही है। वो बुद्ध की ही पूजा कर रहे है ना केवल हनुमान बिल्कि विभिन्न वानर भी। आप खुद ही देख ले, बोधी वृक्ष की पूजा करतें हुए विभिन्न वानरो का समूह दिखाई दे रहा है।

---

[8] https://www.wisdomlib.org/definition/bharata

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. The Jataka Or Stories Of The Buddha'S Former Births Volume 7 Vols. Set : E. B. Cowell
2. Jatakmala-Aryashur Virchit Paperback by Suryanarayan Chaudhary
3. Buddhist birth stories or Jataka tales Volume 1 to 6 by V Fausboll
4. Jatak Mala, CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN DR. JAGDISH CHANDRA MISHRA
5. Pali Sahitya ka itihas by Mahapandit Rahul Sankrtyayan
6. Khoye Hue Budhha Ki Khoj : Dr. Rajendra Prasad Singh
7. Coomaraswamy, A. K. (1956). Buddhist Art and Its Symbols. Harvard University Press.
8. Bhattacharyya, B. (1920). The Indian Buddhist Iconography. Cosmo Publications.
9. Mukherjee, B. N. (1971). The History of Buddhist Thought. Motilal Banarsidass.
10. Basham, A. L. (1989). The Wonder That Was India: A Survey of the Culture of the Indian Sub-Continent Before the Coming of the Muslims.
11. Ahir, D. C. (1992). Buddhism in India: From the Sixth Century B.C. to the Third Century A.D. Munshiram Manoharlal.
12. Marshall, J. (2007). A Guide to Sanchi. Asian Educational Services.
13. Mitra, D. (2017). The Great Stupa of Sanchi: Rediscovering the Eighth Wonder. Niyogi Books.
14. Singh, M. (2001). Sanchi: Monumental Legacy. Archaeological Survey of India.
15. Smith, V. A. (2010). The Jain Stupa and Other Antiquities of Mathura. Cambridge University Press.
16. Srivastava, A. L. (1988). Sanchi. Motilal Banarsidass.
17. Robert L. Brown, "Telling the Story in Art of the Monkey’s Gift of Honey to the Buddha"
18. Tadgell, C. F. (1990). The History of Architecture in India: From the Dawn of Civilization to the End of the Raj. Phaidon Press.
19. वोल्गा से गंगा,राहुलसांकृत्यायन